

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly  
Magazine

Issue  
68

Year  
6

Volume  
18

February 2018  
Chandigarh

Page  
24

मासिक पत्रिका  
Subscription Cost  
Annual - Rs. 120-see page 6

## नमस्ते जी

नमस्ते का सीधा अर्थ है मेरा सिर आपके आगे झुकता है। नमस्ते का अभिन्नदन दोनो हाथ जोड़ कर किया जाता है। इस चित्र को देखें, ऐसे अभिन्नदन के बाद तो अभिन्नदन करने वाले को कौन अपने दिल में स्थान नहीं देगा।

हां जी यह है नमस्ते अभिन्नदन की खासियत और जादू। इस चित्र को देखिये, होठों पर असद भोपाली के यह शब्द खुद ही आ जाते हैं—कदम चूम लूं या आंखें बिछा दू, मेरी तो कुछ समझ में न आये। पर मुश्किल यह है कि हम हिन्दुस्तानियों को इस अभिन्नदन की महिमा का पता ही नहीं और हम दूसरे अनाप शनाप अभिन्नदन प्रयोग में लाते हैं।

हां हमारे देश में चाहे हम भारतीय नमस्ते का प्रयोग न करें पर विदेशों में खास कर मुसलिम देशों में जैसे मिस्र और टरकी में जब भी भारतीय को देखते हैं तो एक दम हाथ जोड़ कर नमस्ते कर गर्मदिली का ऐहसास करवाते हैं।

नमस्ते विदेशों में हमारी और हमारी संस्कृति की पहचान है। शायद हम भारतीयों को यह भी पता न हो कि जैसे लुप्त हुये गायत्री मन्त्र को महर्षि दयानन्द ने खोज कर सामने लाये वैसे ही नमस्ते को भी ऋषि दयानन्द ही सामने लाये। पुस्तक की कुछ पक्तियों सबूत के लिये पेश कर रहा हूँ।—काशी में चतुर्मास व्यतीत करके स्वामी दयानन्द जौनपुर और अयोध्या होकर लखनऊ पहुंचे। एक मास लखनऊ.... वहां उन्होंने 'नमस्ते के रूप में अभिवादन को अपनाने पर बल दिया, फिर

वे अतरौली, अलीगढ़, छलेसर होते हुए 17 दिसंबर, 1876 को दिल्ली पहुंचे दिल्ली

इस अभिन्नदन की एक खास बात यह है कि नमस्ते चाहे सुवह हो या शाम, रात हो या दिन, हर समय किया जा सकता है। दूसरा बड़ा हो या छोटा सभी को किया जा सकता है। आइये अनाप शनाप अभिन्नदनों को छोड़ नमस्ते का प्रयोग करें।



Contact :

**BHARTENDU SOOD**

Editor, Publisher & Printer

# 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047

Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

## अध्यात्मिक होना क्या है?

किसी देवी देवता का नाम लेकर जप करते रहना या दोनो समय पूजा पाठ करना हवन, मन्दिर जाना क्या आपको अध्यात्मिक बना सकता है? इसका जवाब है—जरूरी नहीं आप अध्यात्मिक बनें। फिर अध्यात्मिक होना क्या है? इसका उत्तर स्वामी विदेह ने बहुत अच्छा दिया— अपनी आत्मा की आवाज को केन्द्र बना कर कार्य करना ही अध्यात्मिक होना है। भौतिक उन्नती मनुष्य जीवन का मुख्य अंग है, यह न केवल सुख के साधन देती है बल्कि इसके बिना जीवन नीरस है। परन्तु यही उन्नती जब अध्यात्मिकता से जुड़े बिना की जाती है तो सुख देने की जगह दुखकारी बन सकती है, क्योंकि यह अध्यात्मिकता ही बताती है कि जो रास्ता हमने भौतिक उन्नती के लिये चुना है, वह ठीक है या गलत। यदि आत्मा कहती है कि आपके द्वारा चुना रास्ता गलत है और विनाशकारी है तो आत्मा की आवाज को सुनकर उस रास्ते से अलग हो जाना ही अध्यात्मिक होने का प्रमाण है।

परन्तु आत्मा भी आपको ठीक रास्ते पर तभी डाल सकती है यदि आप आत्मा को ठीक ज्ञान और विवके द्वारा उन्नत करते हैं। आपको ठीक सत्संग मिलता है जो कि पुस्तकों के अध्ययन, महान आत्माओं के जीवन को पढ़ने और अनुकरण करने से, महान काव्यों जैसे कि रामायण को सुनने से सम्भव है। इसी लिये उपासना मन्त्रों में कहा है, अध्यात्मिक मार्ग हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसी प्रवृत्तियों, जो कि पाप को जन्म देती हैं, उन से दूर रखती हैं। इस मानव जीवन कि कश्ती बिना किसी बिध्न के तभी चलती है जब इस का एक पतवार भौतिक उन्नती की और ले जाता है और दूसरा अध्यात्मिक पतवार दूसरी भौतिक पतवार पर अंकुश रखता है। जो व्यक्ति अध्यात्मिक पतवार को दृढ़ता से पकड़ कर रखता है, उस की किश्ती तुफान आने पर भी नहीं डूबती क्योंकि ईश्वर उसकी रक्षा करता है। उसकी आत्मा परमात्मा से जुड़ी होती है। निम्न वेद मन्त्र इसे और अच्छी तरह समझाता है



यह अध्यात्मिक होना नहीं है

**ओइम** अगने नये सुपथा राये अस्मान, विश्वानी देव व युनानी विद्वान,  
यु योण य अस्मज्जुहुराणमे एनो, भुयि"ठां ते नमः उक्तिं विधेम ।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, सही ज्ञान और सही पथ प्रदर्शन के लिये हम आपकी शरण में आए हैं। आप सभी ज्ञानो से परिपूर्ण विद्वान हैं। हम ऐश्वर्य व वैभव के लिये आपसे प्रार्थना कर रहे हैं। हमें ऐश्वर्य व वैभव मिले पर साथ ही कुटिलतापूर्ण कर्मों से भी दूर रहें क्योंकि ऐश्वर्य व वैभव के साथ कुटिलतापूर्ण कर्म विनाश की और ले जाते हैं। हमारी बार – बार यही प्रार्थना है कि हमें श्रेष्ठ मार्ग पर ही चलाना। इसी तरह इस मन्त्र में **आत्मज्ञान, शारीरिक, व आत्मामक बल देने के लिये प्रार्थना की गई है**

इस लिये जब आज हम सभी बच्चों को तेजी से भौतिक उन्नती के मार्ग पर चलते हुये नये किर्तीमान स्थापित करते देखना चाहते हैं, यह आवश्यक है अपने घर की एक खिड़की अध्यात्मिक ज्ञान के लिये भी खोल कर रखें

अध्यात्मवाद और भौतिकवाद में अन्तर प्रत्येक वस्तु को आत्मा के

दृष्टिकोण से देखना अध्यात्मवाद है। किसी भी कार्य को करते समय यह देखना कि इसको करने से आत्मा का उत्थान है या पतन। और यदि जवाब मिलता है कि इसमें आत्मा का पतन है तो उसे किसी भी हालत में नहीं करना, चाहे उस में करोड़ों रूपयों का लाभ ही क्यों न हो। इसी तरह अगर जवाब मिलता है कि इस में आत्मा का उत्थान है तो उसे अवश्य करना। यह है अध्यात्मवाद।

हर एक चीज को भौतिक लाभ और शारीरिक सुख की दृष्टि से देखना मायावाद है। मायावादी भौतिक लाभ और शारीरिक सुख के लिये किसी भी हद तक अपने को गिरा देता है। उसने आत्मा का हनन कर दिया होता है।

# जिससे इहलोक और परलोक सुधरता है वह धर्म है।

जिससे इहलोक और परलोक सुधरता है वह धर्म है।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

तात्पर्य यह है कि जिससे इस संसार में भोग और मृत्योपरान्त मोक्ष की सिद्धि हो वह धर्म है अर्थात् जिससे इहलोक और परलोक सुधरता है वह धर्म है।

जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्यागरूप आचार है, उसी का नाम 'धर्म' और इससे विपरीत जो पक्षपातपूर्ण अन्यायचरण, सत्य का

त्याग और असत्य का ग्रहणरूप कर्म है, उसी को 'अधर्म' कहते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में बहुत ही सरल शब्दों में बताया है कि 'धर्म वह है जिसमें परस्पर किसी का विरोध न हो अर्थात् धर्म सार्वभौम है जिसका किसी विशेष देश, जाति तथा काल से

खास संबंध नहीं होता। जो ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये ही मानने योग्य है, वह 'धर्म' कहलाता है।

जो न्यायचरण सबके हित का करना आदि कर्म हैं उनको 'धर्म' और जो अन्यायचरण सब के अहित के काम करने हैं उनको 'अधर्म' जानो (व्यवहारभानु)। धर्म की सरलता परिभाषा है कि 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' अर्थात् जैसा हमारी आत्मा को अच्छा लगे या व्यवहार

आप अपने लिये दूसरों से चाहते हैं वैसा ही व्यवहार आप भी दूसरों से करें। ऐसा व्यवहार कदाचित न करें जैसा व्यवहार आप नहीं चाहते कि दूसरे आप के साथ कभी करें। बस यही धर्म है। अच्छा पाओगे और बुरा करेंगे तो बुरा ही हाथ आएगा।

प्रत्येक मनुष्य के गुण, कर्म और स्वभाव एक दूसरे से अलग-अलग होते हैं और यही कारण है कि जब से यह दुनिया बनी है तब से आज तक अच्छे लोगों

के साथ बुरे लोग भी विद्यमान रहते हैं और आगे भविष्य में भी इसी प्रकार रहेंगे। कोई भी युग ऐसा नहीं था, न ही वर्तमान में है और न ही भविष्य में होगा, जब मात्र अच्छे लोग होंगे या केवल बुरे लोग रहेंगे। सतयुग, द्वापर, त्रेता और वर्तमान कलियुग, हर युग में दोनों ही प्रकार के लोग रहे हैं। हर युग में धर्म के साथ अधर्म रहा है

और आगे भी रहेगा धर्म हमें कर्म करने की सही जानकारी देता है। मनुष्य जब धर्म के नियमों का पालन करता हुआ अपना जीवन यापन करता है तभी यह कहा जा सकता है कि वह धर्म की रक्षा कर रहा है। इसी तरह जब मनुष्य धर्म को नहीं जानता या फिर निजी स्वार्थों के वशिभूत धर्म की अवेहलना करता है तो ऐसे में धर्म उसकी रक्षा नहीं करता 'धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात् धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति की (हर परिस्थिति में) धर्म ही रक्षा करता है। साधारण भाषा में धर्म का अर्थ है 'मनुष्य के लिये करने योग्य कर्म या कर्तव्य'।

\*\*\*\*\*

# Optimism leads to happiness and success

By Vijay Hashia

*MK Gandhi said, "Man often becomes what he believes himself to be. If I keep saying to myself that I cannot do a certain thing, it is possible that I may end up becoming incapable of doing it. On the contrary, if I have the belief that I can do it, I shall surely acquire the capacity to do it even if I may not have it at the beginning."*

To view the glass as being half full rather than half empty is an admirable quality. This kind of positive perspective is good for the mental and physical health of a person.

## Positive outlook

Optimism puts us in a positive orientation towards the present and future, which in turn affects our beliefs and behaviour. Optimists believe that their own actions result in positive things happening and that they are responsible for their own happiness and they can expect success with task they are performing and better things to happen in the future.

The greatest mystics and teachers, across the world, have told us that everything is energy. This has now been undeniably confirmed by modern science also that thoughts, too, are energy. While mind is static energy, thought is dynamic energy and its power is vibratory, formed by converting static into dynamic force. Thoughts are static energy because thoughts are not static, as you might have seen. Without frame of mind we are capable of changing our thoughts from negative to positive and positive to negative.

Each time we entertain a specific thought, we emit a specific, corresponding frequency, an energy vibration. When we have positive thoughts we experience tones of energy in us. We feel like rushing to do the thing. But if thoughts are negative we all of a sudden feel that I can't do this work. I am

not capable of doing it. I have not enough energy. Like energy attracts like energy. We attract to ourselves those things and circumstances that are in vibrational harmony with dominant mental attitude, habitual thoughts and beliefs. If parents have attitude of defeated persons, it can have its impact on children as well and in that case children will need extraordinary efforts to come out of that. On the other hand, when we are positive automatically we feel energetic and the greater its power to attract its corresponding circumstance into our physical world through the law of attraction.

The more powerful and optimistic your thought is, the more creative can be its effect. And more communication channels open up, lending greater clarity and effectiveness to all that you do and to all you come across. Thoughts can drive attitudes, actions and behaviours. We can use this powerful domino effect for empowerment, achievement,

success, and self-actualisation. Therefore, replace unwanted and negative thoughts with their positive equivalent. Consciousness, pervading the entire universe, is omnipotent, omnipresent, omniscient blissful and source of eternal bliss *satchitanand*. Make

your mind a part of such *satchitanand* Consciousness to be positive and happy. When mind is a part of that one, universal, intelligent consciousness and since thoughts are products of consciousness, its power is limitless. The mind is also one with that single Source and this power within us makes anything possible, provided one accesses the Source by connecting inward. Therefore be a part of Consciousness that infuses energy in you..

Circumstances do effect a man but a man with positive thoughts change the circumstances in his





favour. Everything that we perceive in the physical world has its origin in the invisible, inner world of our thoughts and beliefs. Every effect we see, hear and speak in our outside or physical world has a specific cause that has its origin in the inner or mental world. This is the essence of thought power.

Recently I read the story of Subhasini Mistry who was utterly grief-stricken after her husband died without proper medication, but she resolved to build a hospital for the needy so that others would not have to suffer the same fate as her husband. What followed was a life of abject poverty and extreme physical labour as the mother of four soldiered on with the single-minded pursuit of setting up the hospital. She toiled for years as a manual labourer, a housemaid and a vegetable-seller and raised one of her sons to be a qualified doctor.. At 70, she can look back with satisfaction at a two-storeyed, whitewashed building, the realisation of her dream to build a hospital for the poor - all because she couldn't afford proper medical treatment for her husband and became a widow at 23.

Her younger son Ajoy is a doctor at the hospital which has 12 doctors and over 25 beds and runs on donations.

Mistry told "When my husband passed away, I was in shock initially. Then I realised I had four

hungry mouths to feed. My oldest child, a son, was four-and-a-half-years old at the time. My youngest, a daughter, was one-and-a-half.

"I had no education and couldn't even tell the time. So I decided I would do whatever work that was available. I started out as an aayah (domestic help) in the nearby houses."

During that period, she made a silent promise to herself: she would set up a hospital for the needy that would provide treatment free of cost.

Gradually she realised that house work alone would not suffice; so she took to brick-laying and other physically demanding chores to supplement her meager income. Her two sons would lend a hand at work. Early on, she had made up her mind that come what may, she would educate one of her sons to be a doctor.

Put another way, the conditions and circumstances of our lives are as a result of our collective thoughts and beliefs. Every aspect of our life, from the state of finances to the state of health, success, happiness and relationships, simply mirrors our thoughts and beliefs. Happiness is the most intrinsic human nature, and hope is a primary, learnt condition, which can lead to happiness. Optimism is a primary, cognitive condition that spawns hope. In turn, happiness seems to reinforce optimism, leading to a cycle of happy, hopeful and optimistic life.

\*\*\*\*\*

## पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप बैंक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-  
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFS Code - CBIN0280414  
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFS Code - IBKL0000272  
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFS Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का बैंक भेज दें।

## भोग और भाग का अनुपात

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में जीवन यापन करते समय अपने भोग और अपने लिए निर्धारित भाग के अनुपात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि हम अपने निर्धारित भाग से अधिक सुख सुविधाओं ऐश्वर्य का उपयोग उपभोग करते हैं तो निश्चित रूप से हम उस अधिक उपयोग के लिए दूसरों के ऋणी हो जाते हैं। सामान्य जीवन में अक्सर यह ऋण हमें कई बार दिखाई भी नहीं देता। भोग की अधिकता में ऋण दिखाई ना देने का कारण कुछ तो हमारी अल्पज्ञता अबोधता है दूसरा उस ऋण को चुकाने के लिए उदासीनता या फिर नास्तिक चार्वाक के कथान पर आस्था “ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्” यानि उधार लो घी पियो और भूल जाओ।

अब इन पर एक एक

करके विचार करते हैं। किसी मित्र ने हमें जलेबी खिलाई तो हम पर हजारों व्यक्तियों का ऋण आ गया क्योंकि उस जलेबी के बनने में हजारों लोगों का हाथ है और चूंकि हमने उसका सेवन किया तो उन सभी का ऋण हम पर हो गया। सामान्य रूप से हमें इस बात का बोध हमारी अबोधता, अल्पज्ञता के कारण नहीं होता। जैसे जलेबी बनाने में गेहूं किसान ने खेत में बोया काटा, चक्की में पीसा, हलवाई ने प्रयोग किया ऐसे ही चीनी बनने से पूर्व

गन्ना बोना काटना मिल में चीनी का बनना फिर प्रयुक्त ईंधन और कढ़ाई के बनने में कितने ही लोगों का हाथ है। इस प्रकार जलेबी खाने से जाने अनजाने हजारों लोगों का ऋण हम पर आ गया।

यह तो हमारी अबोधता के कारण हुआ पर कई बार हम इसके प्रति उदासीनता भी बरतते हैं। सुबह के समय सैर के लिए पार्क में गए पेड़ों से प्राप्त आक्सीजन और पुष्पों की सुगंध को जी भर कर लंबे लंबे शवास लेकर ग्रहण किया। परंतु स्वयं कभी पेड़ या पुष्प लगाकर उस ऋण से उऋण होने का प्रयास नहीं किया। धीरे धीरे इन सामाजिक

ऋणों के प्रति उदासीनता इतनी प्रबल होती चली गई कि हम नास्तिक चार्वाक के कथन पर चलने लगे उधार लो घी पियो और मौज करो।



परंतु अपने भाग अर्थात् ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत हमारे पूर्व के कर्मों के फलों के आधार पर निश्चित की गयी मात्रा से अधिक धन संपत्ति ऐश्वर्य सुखों के भोग से हम पर अनेकों ऋण चढ़ जाते हैं। यह ऋण कर्म फल सिद्धांत के अन्तर्गत हमारे कष्टों दुःखों का कारण बनते हैं। इन आगामी कष्टों, दुःखों से मुक्ति का मार्ग क्या है इसके लिए हमें अपने भाग और भोग के अनुपात को ठीक रखना होगा। भाग और भोग के अनुपात को सही करने के लिए हमें अपने जीवन में भोगों को कम से कम केवल

आवश्यकतानुसार रखना पड़ेगा। व्यर्थ संग्रह, भौतिक सुख साधनों का एकत्रीकरण हमारे भोगों को बढ़ाता है जो अंततः हमारे बंधनों और दुःख का कारण बनता है। इसलिए हमें जीवन में अपने भोगों को न्यूनतम अर्थात् अपनी व्यर्थ की इच्छाओं पर नियंत्रण और मन को अपने वश में रखना चाहिए ताकि भोग भाग से अधिक ना हो सकें।

सामान्य विनिमय की दृष्टि से भी देखे तो यदि जेब में पैसा है तभी हम बिना उधार लिए वांछित वस्तु को खरीद सकते हैं। अर्थात् यदि हम क्रय भाक्ति को बढ़ाना चाहते हैं तो हमारे पास जेब में अधिक धन होना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमें अपने भोग बढ़ाने से पूर्व अपना

भाग बढ़ाना होगा। अपने भोगों का भाग बढ़ाने के लिए सरल सिद्धांत है कि हमें जीवन से सदा निष्काम भाव से परोपकार के यज्ञीय कार्य करने चाहिए। सर्वहितकारी परोपकार के कार्य करने से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अंतर्गत अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् के सिद्धांत से हमें उन यज्ञीय कार्यों का फल अच्छी किस्मत नियति या प्रबंध के भोगों के रूप में मिलता है और हमारा भाग स्वतः बढ़ जाता है।

वैसे भी मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में मनुष्य अपनी अल्पज्ञता, अल्प शक्ति,

एकदेशीयता के कारण अपने जीवन के कार्यों के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहता है। यही समाज के अवयवों की एक दूसरे पर निर्भरता ही परस्परतंत्रता के सिद्धांत को जन्म देती है। अर्थात् सामान्य जीवन में जाने अनजाने ऋण लेते और ऋण देते रहते हैं। ऐसी स्थिति में वाणिज्य के सामान्य सिद्धांत का

पालन करें कि मेरा लिया हुआ ऋण कभी दिए हुए ऋण से ज्यादा ना होने पाए। और हम जीवन में सदा लिए हुए ऋण अर्थात् दूसरों के अपने प्रति किए गए उपकार को स्मरण रखें और परोपकार के कार्यों से उन ऋणों से उऋण होने का प्रयास किया करें। हम सदा प्रयास करें और परमपिता परमे वर से प्रार्थना करें कि मेरे जीवन में मेरे भोग मेरे भाग से

अधिक ना हो जायें और हम सदा वेद के इस आदेश का पालन करूँ "मा अहं अन्य कृतेन भोजम्" अर्थात् मैं किसी दूसरे की कमाई ना खाऊँ। मैं अपनी ही कमाई पर निर्भर रहूँ।

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

602 जी एच 53

सैक्टर 20 पंचकूला

मो. 09467608686 9878748899

\*\*\*\*\*

## जीवन में बड़ी उपलब्धियाँ व आशातीत सफलताएँ प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है बड़े सपने देखना

सीताराम गुप्ता



कुछ लोग जीवन में आने वाली समस्याओं से विशेष रूप से आर्थिक समस्याओं से घबराकर अपने खर्चों में कटौती करने और अपने सपनों का गला घोटने में लग जाते हैं। उनके अनुसार जीवन में समस्याओं से बचने का यही एकमात्र उपाय है लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत होती है। समस्याओं से बचने से न तो हमारी समस्याएँ कम होती हैं और न उनका समाधान ही हो पाता है। ये तो बिल्ली को देखकर कबूतर के आँखें मूँद लेने जैसी स्थिति है।

ऐसे लोग प्रायः कहते हैं कि हवाई किले मत बनाओ या दिन में सपने देखना छोड़ दो लेकिन आज ये बात सिद्ध हो चुकी है कि जीवन में आगे बढ़ने या कुछ पाने के लिए दिन में सपने देखना बहुत ज़रूरी है। हमारा भविष्य हमारे सपनों के अनुरूप ही आकार ग्रहण करता है।

आज दुनिया में जो लोग भी सफलता के ऊँचे पायदानों पर पहुँचे हैं वो अपने सपनों की बदौलत ही ऐसा कर पाए हैं और जो लोग किसी भी क्षेत्र में सबसे नीचे के पायदान से भी नीचे हैं वो भी अपने कमज़ोर व विकृत सपनों के कारण ही वहाँ हैं।

“रिच डैड पुअर डैड” के लेखक रॉबर्ट टी. कियोसाकी कहते हैं कि हमें अपने खर्चों में कमी करने की बजाय अपनी आमदनी बढ़ानी चाहिए और

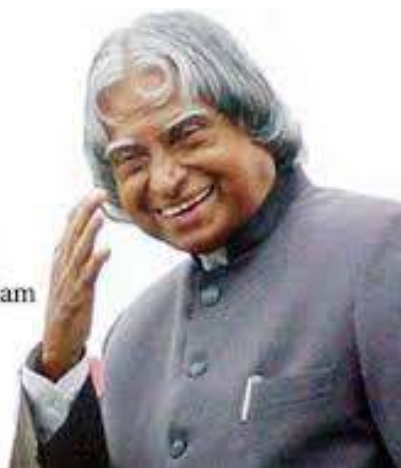
अपने सपनों को सीमित करने की बजाय अपने साहस और विश्वास में वृद्धि करनी चाहिए। जिस किसी ने भी सही सपने चुनने और देखने की कला विकसित की है वही संसार में सबसे ऊपर पहुँच सका है। ऊपर पहुँचने का अर्थ केवल धन-दौलत कमाने तक सीमित नहीं है अपितु जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति व विकास से है। अच्छा स्वास्थ्य तथा प्रभावशाली व आकर्षक व्यक्तित्व पाने का सपना भी कम महत्वपूर्ण नहीं होता। जो लोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपेक्षित ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाते ज़रूर उनके सपनों व उन्हें देखने के तरीकों में कोई कमी रही होगी। सपने देखना एक कला ही नहीं

अपितु एक उत्कृष्ट कला है। प्रश्न उठता है कि सही सपनों का चुनाव कैसे करें और कैसे उन्हें देखें?

डॉक्टर अब्दुल कलाम साहब ने कहा है कि सपने वो नहीं होते जो हम सोते वक़्त नींद में देखते हैं अपितु सपने वो होते हैं जो

हमें सोने नहीं देते। वास्तव में जीवन में कुछ करने या पाने की जो उत्कट इच्छा, बेचैनी या तड़प होती है वो व्यक्ति का सपना ही होता है। ऐसे सपने नींद में नहीं जागते हुए और सोच-समझकर देखे जाते हैं। रात को नींद में हम सपने देखते नहीं अपितु वे स्वयं हमारी नींद में आ उपस्थित होते हैं जिन्हें हम प्रायः भूल जाते हैं और वो हमें बेचैन भी नहीं करते। जो सही मायनों में हमें बेचैन कर द, हमें सोने न दे

You have to  
dream before  
your dreams  
can come true  
.....APJ Abdul Kalam





वही वास्तविक सपना है और ऐसे सपने पाले जाते हैं। सपना पालने के बाद उसकी देख-भाल व परवरिश की जाती है ताकि वो अपने अंजाम तक पहुँच सके। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पश्चिमी देशों में हर साल 11 मार्च को 'ड्रीम डे' अथवा 'स्वप्न दिवस' मनाया जाता है।

वास्तविकता ये है कि हमारा मन कभी चैन से नहीं बैठता। उसमें निरंतर विचार उत्पन्न होते रहते हैं। एक विचार जाता है तो दूसरा आ जाता है। हर घंटे सैकड़ों विचार आते हैं और नष्ट हो जाते हैं। ये विचार हमारी इच्छाओं के वशीभूत होकर ही उठते हैं। ये हमारे सपने ही होते हैं। सपनों का प्रारंभिक स्वरूप। हमारे अवचेतन व अचेतन मन में विचारों की कमी नहीं होती। पूरे जीवन के अच्छे व बुरे सभी अनुभव इनमें संग्रहित रहते हैं। ये अनुभव ही हमारे विचारों के मूल में होते हैं। इन असंख्य विचारों में से जो विचार जीवन या भौतिक जगत में वास्तविकता ग्रहण कर लेता है वो एक सपने की पूर्णता ही होती है। कई बार हमें अपने इस सपने की जानकारी भी नहीं होती। सपने की जानकारी न होने से सपने की जानकारी होना बेहतर ही नहीं बेहतरीन है। संभावना रहती है कि ग़लत विचार हमारा सपना बनकर हमें तबाह कर डाले। अतः नींद में नहीं अपितु खुली आँखों से सोच-समझकर सपने देखना ही श्रेयस्कर है।

अब एक और प्रश्न उठता है कि सही विचारों अथवा सपनों के चयन के लिए क्या किया जाए? सही विचारों के चयन के लिए विचारों को देखकर उनका विश्लेषण करना और उनमें से किसी अच्छे उपयोगी विचार का चयन करना अपेक्षित है। जब हम रोज़ मर्मा की सामान्य अवस्था में होते हैं तो न तो विचारों को सही-सही देखना ही संभव है और न उनका विश्लेषण करना ही। इसके लिए मस्तिष्क की भांत-स्थिर अवस्था अपेक्षित है। ध्यान द्वारा यह

स्थिति प्राप्त की जा सकती है। मस्तिष्क की चंचलता कम हो जाने पर जब हम शांत-स्थिर हो जाते हैं तो उस अवस्था में विचारों को देखना और उनका विश्लेषण करना संभव हो जाता है। उस समय हमें चाहिए कि हम अनुपयोगी नकारात्मक विचारों पर ध्यान न देकर केवल उपयोगी सकारात्मक उदात्त विचारों पर संपूर्ण ध्यान केंद्रित कर लें। हम जो चाहते हैं मन ही मन उसे दोहराएँ। उसी विचार के भाव को पूर्ण एकाग्रता के साथ मन में लाएँ। उस भाव को अपनी कल्पना में चित्र के रूप में देखें।

अपने विचार, भाव या सपने को चित्र के रूप में देखना सबसे अधिक महत्वपूर्ण व फलदायी होता है। हम पूरे घटनाक्रम को एक फिल्म की तरह भी देख सकते हैं। आपका जो सपना है उसे एक फिल्म की तरह अथवा उस सपने की परिणति को एक चित्र की तरह देखें। आपकी फिल्म अथवा चित्र जितना अधिक स्पष्ट होगा सपने की सफलता उतनी ही अधिक निश्चित हो जाएगी। यह पूरी प्रक्रिया हमारे मस्तिष्क को अत्यंत सक्रिय व उद्बलित कर देती है। मस्तिष्क की कोशिकाएँ हमारे सपने के अनुरूप अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण करने में जुट जाती हैं और तब तक न स्वयं चैन से बैठती हैं और न हमें ही चैन से बैठने देती हैं जब तक कि वो सपना पूरा नहीं हो जाता। बिना किसी सपने के न तो हमारा मस्तिष्क ही सक्रिय होता है और न अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण ही होता है। इसी से जीवन में सपनों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। अपने अंदर सपने देखने की कला उत्पन्न करो। अच्छे सपने देखो और जीवन में विश्व के सर्वोच्च शिखर पर कदम रख दो।

ए. डी. 106—सी, पीतम पुरा,

दिल्ली — 110034

फोन नं 09555622323

Email : srgupta54@yahoo.co.in

\*\*\*\*\*

# शिक्षा और विद्या

— डॉ. महेश विद्यालंकार

भौतिक उन्नति प्रगति, विकास और ज्ञान का सम्बन्ध शिक्षा से है। शिक्षा अक्षर ज्ञान, पुस्तकीय ज्ञान, सूचना संग्रह, अच्छे नम्बर और डिग्रियों तक सीमित है। शिक्षा शारीरिक सुख भोगों तक सीमित है। विद्या आत्मिक उन्नति परमात्म-चिन्तन और जीवन को श्रेष्ठ एवं पवित्र बनाती है। जीवन में धार्मिकता, आधुनिकता, नैतिकता, सदाचार शिष्टाचार आदि की भावना जाग्रत करती है। विद्या सुखी नीरोगी प्रसन्नता जीवन की कुंजी कहलाती है तभी कहा है, **“विद्वानिहीनः पशुभिः समानः”**

विद्या हीन व्यक्ति पशु के समान होता है। विद्या से ही व्यक्ति विद्वान बनता है। शिक्षा से तरह-तरह का ज्ञान तो एकत्र हो जायगा, मगर सच्चे अर्थ में आत्मज्ञानी तथा विद्वान नहीं हो सकता है। भारत सदा से विद्या का उपासक रहा है। यूरोप ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। मगर जीवन से विद्या और परमार्थ विद्या में पिछड़ गया। विद्या से ही मनुष्य सच्चे अर्थ में मानव बनता तथा कहलाता है। शास्त्र कहते हैं—

**“विद्या सा या विमुक्तये”**,

सच्ची विद्या वह है जो हमें वचनों, बुराईयों, दोषों एवं अवगुणों से छुड़ाए। हमारे अन्दर प्रभुता से हटकर देवत्व की भावना जाग्रत करें। जो हमें जीवन का सत्य स्वरूप और सन्मार्ग बताए। सच्ची विद्या का पढ़ना—समझना जीवन का असली स्लेबस है। आज स्कूलों, कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में भौतिक ज्ञान व शिक्षा पर तो पूरा समय, शक्ति, धन लगाया जा रहा है। जीवन की असली आत्मपरमात्म विद्या पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उसी का परिणाम है कि आदमी सच्चे

अर्थ में इन्सान नहीं बन पा रहा है। जिसमें इन्सानियत, मनुष्योचित, गुण, कर्म, स्वभाव और आकर्षण हो।

**“विद्या धर्मेण शोभते”**

विद्या धर्म से बढ़ती, फलती—फूलती और शोभा प्राप्त होती है। विद्या से ही जीवन में आर्ट ऑफ

लिविंग की कला आती है। जीवन में यदि जीवन नहीं तो चाहे

कितना भी भौतिक ज्ञान, सुख—साधन, भोग पदार्थ एकत्र कर लें तब भी जीवन अपूर्ण तथा अधूरा ही रहता है। शिक्षा स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग को बढ़ाती है और विद्या स्टैंडर्ड ऑफ लाईफ को ऊंचा ले जाती है। विद्या धर्म युक्त जीवन जीते हुए धर्म अर्थ काम मोक्ष तक ले जाती है। यही जीवन का सत्य लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वर्तमान भौतिक शिक्षा में कुछ पढ़ाया और बताया नहीं जा रहा है। इसलिए वर्तमान शिक्षा विद्या से रहित अधूरी है। वेद का सन्देश

**“विद्या च अविद्या, च अविद्यो च”**

भौतिक ज्ञान के साथ मात्र आध्यात्म विद्या दोनों का समन्वय करके चलो तभी जीवन—जगत में सुख—शान्ति प्रसन्नता विश्वबन्धुत्व की भावना बनेगी। उपनिषद् भी कहते हैं

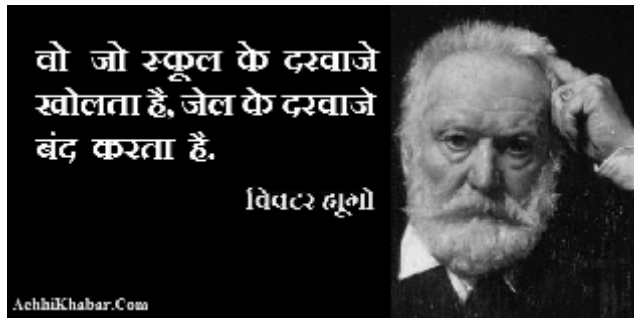
**“विद्यया अमृतं अश्नुते”**

विद्या से अमृतत्व ;आनन्दद्व की प्राप्ति संभव है। शिक्षा से भौतिक सुख भोग पदार्थ तो मिल

जायेंगे, मगर सच्चा आत्म आनन्द नहीं मिलेगा। सच्चे आनन्द के खजाने का ताला तो आत्मविद्या की कुंजी से ही खुलेगा। जीवन जगत को जितनी भौतिक शिक्षा ;ज्ञानद्व की जरूरत है, उतनी ही

आत्म विद्या की भी आवश्यकता है। तभी वर्तमान समस्याओं, उलझनों, विवादों, दुःखों, कष्टों अशान्ति आदि का समाधान संभव है। आज शिक्षा बढ़ रही है। जीवन की असली विद्या घट रही है। भारत का जीवन—दर्शन रहा है शिक्षा—विद्या, भोग योग, भौतिकता आध्यात्मिकता,

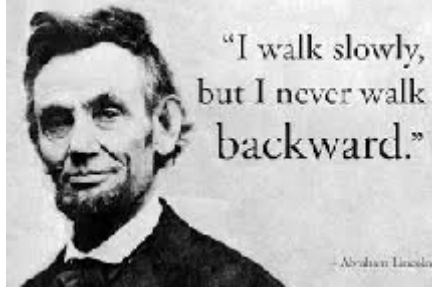
शरीर—आत्मा, प्रकृति परमात्मा आदि का सन्तुलन एवं समन्वय करके चलो। तभी जीवन—जगत सन्मार्ग की ओर प्रेरित रहेगा। भारतीय शिक्षा दर्शन में विद्यार्थी और विद्यालय बोला जाता है। जिसका सीधा सम्बन्ध विद्या के साथ है, न कि शिक्षा के साथ है। शिक्षा का सम्बन्ध इहलोक के साथ है और विद्या का सम्बन्ध इह श्रेष्ठजीवन तथा परलोक दोनों के साथ है।



\*\*\*\*\*

## बार बार असफल होने के बाद दिखता है सफलता का रास्ता

एक बार एक व्यक्ति शहर में पैदल चला जा रहा था कि अचानक उसकी नजर एक बड़े मैदान पर चल रही सर्कस पर रुक गई। वह वहां रस्सी से बन्धे हाथी को देख रहा था और सोचने लगा कि जो हाथी लोहे की मोटी चेन या कड़ी को तोड़ने की ताकत रखता है, वह एक साधारण रस्सी से बन्धे होने के बावजूद भी अपने को सवतन्त्र करने की कोशिश नहीं कर रहा।



यह बहुत प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हुआ तो इसके मन में यह बात बैठ गई कि उसके लिये इस रस्सी को तोड़ना सम्भव नहीं। जब कि आज यह इस रस्सी को तोड़ने की क्षमता रखता है। यह इसी बात को सोचकर प्रयत्न नहीं करता कि जब पूरे जीवन इस रस्सी को तोड़ नहीं पाया तो अब क्या तोड़ूंगा।

पास में ही हाथी का परिक्षक खड़ा था। उसने अपने मन में दौड़ रहे संशय को परिक्षक के साथ सांझा करने का निश्चय किया। वह परिक्षक के पास गया और बोला—यह हाथी इस रस्सी को तोड़ने की क्षमता रखता है फिर भी यह इस को तोड़ कर अपने आप को सवतन्त्र क्यों नहीं कर लेता? परिक्षक ने उस व्यक्ति की उत्सुकता को पहचाना और बोला—मित्र बात यह है कि जब यह हाथी एक छोटा सा बच्चा था, तभी से हम उस को इस रस्सी से बांध रहे हैं। उस समय यह इस रस्सी को तोड़ की भागने की कोशिश करता पर कभी भी सफल नहीं हुआ। जब

उस हाथी की तरह हम में भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो एक दो असफलताओं के बाद यह सोचकर प्रयत्न करना बन्द कर देते हैं कि यह उनके बस का नहीं। यही फर्क होता है आम व्यक्ति में और जो नाम कमाते हैं। ईबराहिम लिंकन को हर कदम पर असफलता हाथ लगी, उस के स्थान पर और कोई व्यक्ति होता तो आत्महत्या कर लेता पर वह न केवल अमेरिका के सर्वोच्च पद पर आसीन हुआ बल्कि अभूतपूर्व कदम उठा कर आज तक के सब से मशहूर राष्ट्रपति बने।

ऐसा माना जाता है कि असफलतायें ही जीवन का रास्ता बनाती हैं।

\*\*\*\*\*

## दुष्कर्म के खिलाफ सार्वजनिक फांसी देना ही ठीक

भारत में निर्भया केस के बाद लड़कियों के साथ सामुहिक बलात्कार और उसके बाद बहुत निर्दयता के साथ मार देने की घटनाओं की तेजी से वृद्धि हुई है। कई बार तो तीन चार साल के बच्चों के साथ भी यह सब हो रहा है। हरियाणा में 10 दिनों में 7 ऐसी घटनायें किसी को भी हैरान और परेशान कर रही हैं। ऐसा लगता है कि जस्टिस वर्मा कमेटी द्वारा संशोधित कानून और लोगों द्वारा प्रकट किया रोष इसका ईलाज नहीं और हमें मानविय अधिकार संस्थाओं की सिफारिश को दूर किनारे कर ही सख्त कानून, जैसा कि सार्वजनिक फांसी देने पर विचार करना होगा। जैसा कि पाकिस्तान सोच रहा है।



करना पड़ा। आंकड़े बताते हैं कि जब से सार्वजनिक फांसी देने के प्रवाधान पर रोक लगी है ऐसे दुष्कर्म तेजी से बढ़े हैं जब कि दो सार्वजनिक फांसी की घटनाओं के बाद ही ऐसे दुष्कर्म लगभग बन्द हो गये थे।

इसको देखते हुये पाकिस्तान के मुख्य मन्त्री शाहबाज शरीफ ने कहा है कि ऐसे अपराधों पर अंकुश लगाने के लिये सार्वजनिक फांसी देने का प्रवाधान पर पुन विचार किया जायेगा।

मेरा मानना है कि हमें भी यह प्रवधान लागू करना चाहिये। मानवा अधिकार तो उनके लिये होते हैं, जो कि मानव हो कि हैवानों के लिये और जिस प्रकार की घटनाये हम पढ़ रहे हैं वे तो हैवानों को भी शर्मिदां कर सकती हैं।

पाकिस्तान में पहले सार्वजनिक फांसी देने का प्रवाधान था पर बाद में मानविय अधिकार संस्थाओं के दवाव में इसे बन्द

\*\*\*\*\*

## *Editorial*

# Country is heading for a hung parliament in 2019

First the Gujarat assembly polls and now the outcome of three by- elections in Rajasthan, -two Lok Sabha and one Vidhan Sabha, have given enough indication about the falling graph of BJP popularity both in the centre and in the BJP ruled states. Generally, the ruling party does not lose by-elections but if BJP has, and that also with huge margins, especially after its losses in Ratlam and Gurdaspur Parliamentary seats and not so impressive performance in Gujarat assembly elections then one thing is clear that voters are not happy the way things have been going on under

Mr. Modi and they feel let down after having been served with tall promises. And there is no exaggeration if one concludes that anger against the ruling establishment is widespread. All sections except the Government employees on regular rolls feel hurt and hit. Reasons are many ranging from

demonetization, burgeoning unemployment, farm distress, hard Hindutva to half cooked GST. What adds to BJP's woes is the fact that none of its leaders has been able to gauge or take cognizance of this widespread anger against the present establishment. They are dismissing this loss as one off incident of no consequence. Today BJP cadre feels so confident of Modi's charisma that such setbacks do not ruffle them. They are living with self righteous approach.

But what is still bigger outcome of these verdicts is that it has given the most likely picture of post 2019 parliamentary elections for 17<sup>th</sup> Lok Sabha, though it can always change in next 14 months

since the political situation in India changes very fast, like the weather in UK's summer. One or two developments can change the tide as it happened in Gujarat. Mani Shankar Iyer's inappropriate and untimely remarks took away the advantage built up by the Congress. Again much will depend how opposition parties carry out their campaign to expose failures of Mr Modi's regime. After all in India, it is the quality and magnitude of campaign which makes or breaks, whether it was against Rajiv Gandhi in 1989 when Bofors was made the issue or against scam ridden Mr Manmohan

Singh's Govt in 2014 or even against Indira Gandhi in 1977 by Raj Narain and others. It is also established that to make the campaign effective parties don't mind making it slanderous without caring for the truthfulness or consequences of allegations. Since it takes years for the courts to decide



*Don's be surprised if in 2019 Didi is your PM*

whether these were right or baseless. The decision of the Delhi High Court in the Bofors case has established how Rajiv Gandhi was a victim of smear campaign. But, as the history of Post Indira Gandhi period tells, the Congress party has yet to learn this art and for them the best role model can be Mr Narendra Modi-- latest example----remove this 10% commission Government, used by Modi in poll bound Karnataka. I doubt whether Mr. Modi can prove this allegation.

Coming to the most likely post 2019 Lok Sabha Election scenario, we will be back to the situation that prevailed between 1989 to 2014 when country was ruled by coalition governments, with regional



outfits calling the shots. Reason , BJP looks like losing 30 to 50% seats in the Hindi belt comprising of Madhya Pradesh, Rajasthan, Gujarat, Chatisgarh, Haryana, Jharkhand, Bihar, Maharashtra and UP from where it has nearly 240 of the 282 seats it had won in 2014 elections. Then we have West Bengal Tamil Nadu, Andhra, Telengana, Kerala, and North Eastern states where BJP was never a force and even in last five years it has failed to make any significant inroads sufficient to give it even a dozen seats.. Party can boast of replacing Congress in West Bengal but then the gap between TMC and BJP is too big to transform in to seats. Which means BJP will be left with 160 to 180 seats in the Hindi belt that also if it loses only 30% of the existing seats and it can't expect more than 35 seats from other states like Karnataka, Orissa and Assam, where it has some presence, taking its total tally to something between 180 to 210. The gainer is going to be the Congress party which was mauled badly in 2014 elections. Its tally may jump significantly from 46 to 120 to-140, not because it has been able to generate new hope in the Indian masses but because a big chunk of BJP's traditional vote bank, especially middle class and farmers will vote against the party with a feeling of vengeance to the advantage of Congress party. In such a behavior, teaching a lesson is the sole objective' Evaluation of alternative is put on the back burner. In nut shell, BJP will be punished for its hubris and wrong policies.

What adds to BJP's problems is that all BJP ruled states are facing the heat of non performance and three big states will go to polls in November. If the party is not able to regain power in these states then the task will become even more difficult for it.

Next big question is how the allies or regional parties will behave and embrace coalition. BJP after its last four years attitude of indifference and arrogance can't expect the allies to come around easily, as has been the case in 1998 and 1999 when main enemy was Congress and not BJP. Again its line of hard Hindutva in last four years will make many fence sitters wary of it. Only easy prey looks

to be Tamil Nadu but then they move with the tide. In the first likely scenario, if BJP is able to convince the allies under some common agreed programme, Mr Modi will be the PM as he enjoys position of preeminence in the party, but with diminished authority, his effectiveness will get blunted, as coalition partners will like to have their say in policy making, and in that situation he may not like to carry on for long and may opt for midterm polls at the earliest opportunity.

The second possible scenario is, a leader from a regional party like Mamta Banerjee is Made Prime Minister with outside support from Congress. She looks to have best claim amongst leaders of regional parties. Though, earlier experience with Deve Gowda as PM in 1995-96 was not very good but then no two situations are similar. Regional parties of 2019 may demonstrate better sense of responsibility when compared with 1996 when this concept was in infancy. Third option is to bring Congress in the centre with Mr Rahul Gandhi as Prime Minister and other non-BJP parties supporting it. Congress has quite a few good leaders, especially the younger ones, who till now have not been given enough opportunity, provided rotten apples or without any mass base, are shunted out. This should work and will be better than the second option. We all know coalition headed by the Congress under Dr Manmohan Singh did reasonably well from 2004-09.

But what is certain that we will witness a hung parliament Looking at the last 25 years experience I'll shrug from saying that government with single party rule what BJP has after 2014 elections is always better than the coalition government. Most important reforms in India's post independence period were seen during the coalition government headed by P.V. Narasimha Roa and two periods of maximum development in terms of GDP were also under coalition governments, , from 1999 to 2004 and then 2004 to 2009. All depends how the leader carries his team. So let us remain open to the concept of coalition rather than falling to Modi's bait of stability at the centre.

\*\*\*\*\*

## स्वस्थ जीवन के लिये कुछ उपयोगी उपाय

खास कर जो 40 वर्ष से उपर है या किसी रोग से शिकार है



- 1 मनुष्य कुछ समय बाद ही समझ जाता है कि क्या खाने से, कितनी मात्रा में खाने से वह स्वस्थ रहता है और क्या खाने से, कितनी मात्रा से अधिक खाने से और किस समय खाने से वह बिमार पड़ सकता है या उसके शरीर की स्फूर्ती खत्म हो जाती है। यह भी आप मानें कि मानसिक और शारिरक स्फूर्ती सब से आवश्यक है। कहने का अर्थ यह है कि व्यक्ति स्वयं का डाक्टर खुद है। इसलिये,
- 2 ऐसी वस्तुएं खाओ जो आपके शरीर के लिये अच्छी हो और जो आप ने अनुभव द्वारा जाना हो। यह अवश्य नहीं जो राम को खाने में स्वास्थ्य के लिहाज से ठीक हो वह श्याम को भी। हर व्यक्ति के अन्दर की मशीनरी की स्थिती अलग है। अक्सर सुनने को मिलता है कि वह मेरे साथ खाना खाने बैठी थी, 6 चमाती खा गई और फिर प्लेट भर हल्वा भी खा लिया, जब कि मैं एक चपाती बड़ी मुश्किल से खाती हूं। अगर उसका सिस्टम इतना अच्छा है कि 6 चपाती पचा सकती है तो अवश्य

खाये पर आप आधी ही खायें। बिन खाये मृत्यु की सम्भावना कम है और आवश्यकता से अधिक खाने से अधिक। अधिक खा कर पचाने के लिये दवाई खाने से कहीं अच्छा है कम खाओ और जो पचता नहीं वह न ही खाओ।

- 3 केवल खाने के लिये मत खाओ, जीने के लिये खाओ कहने का अर्थ यह है कि तभी खायें जब भूख लगे और उतना ही खायें जितना की आपका सिस्टम ले सकता है। जिब्हा के स्वाद में फंसकर पेट में कूड़ा कर्कट न डालते रहें। कुछ भी मुंह में डालने से पहले यह सोचे क्या इस की आवश्यकता है। अगर बिन खाये गुजारा होता है तो न खायें।

वेद कहते हैं मनुष्य का जीवन सौ या सौ से भी अधिक वर्ष चलने वाला एक यज्ञ है। आत्मा का भोजन आत्म तेज, मन में अच्छे विचार ही आये और शरीर को ठीक खुराक ही प्राप्त हो, उसके लिये और इन्द्रिय निग्रह इस यज्ञ की सफलता के लिये आवश्यक हैं।

\*\*\*\*\*

## पुस्तक

( English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रुपये है। जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रुपया भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकाउंट ( Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते हैं। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है। मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। **Book is in English** कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। **Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172-2662870, 9217970381

## प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरुकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :  
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,  
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL  
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines  
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh  
Tel.: 0172-2708497

## M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

( An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

ईश्वर सर्वभूतानां हृदयेषे तिष्ठति अर्थात् वह ईश्वर तो अति सूक्ष्म रूप में हम सभी जीवात्माओं के अन्दर विद्यमान है। इससे स्पष्ट हुआ कि उस ईश्वर और उसके काव्य को देखने समझने के लिए हमें कहीं बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है। वैसे भी हमारी इन्द्रियां बाह्यमुखी हैं अर्थात् हमारी आंखें बाहर की दुनियां को देखती हैं कान बाहर की आवाजें सुनते हैं परन्तु उस ईश्वर और उसके काव्य को देखने के लिए तो हमें अन्तर्चक्षु खोलकर अन्दर की यात्रा शुरू करनी पड़ेगी। तभी हम जान पायेंगे कि मैं और मेरा ईश्वर दोनों एक साथ मेरे ही अन्दर विराजमान हैं। बस आवश्यकता है तो अपने ही अन्दर झांकने की अन्तः यात्रा प्रारम्भ करने की।

### SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

# Swami Shraddhanand

*Forgotten Liberator*

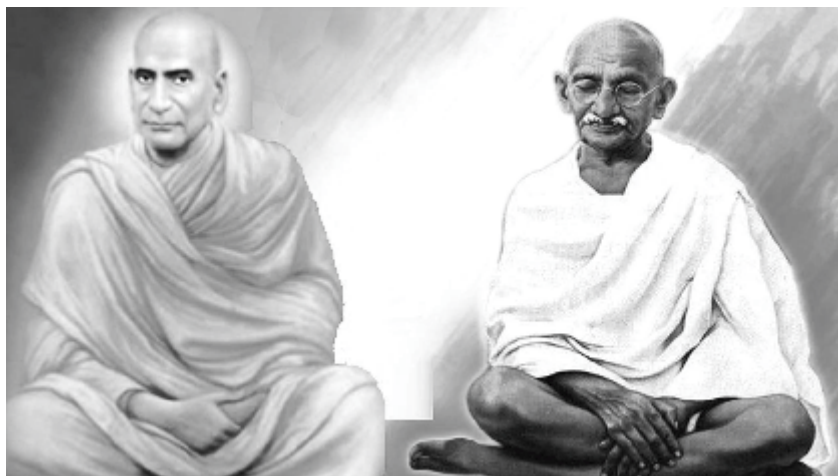
**Poulasta Chakraborty**

हमारे देश को आजाद हुये 100 वर्ष भी नहीं हुये परन्तु आज हम अपने इस गलत लोकतन्त्र की वजह से ऐसे समय में प्रवेश कर गये हैं। जब महान व्यक्तियों का मूल्यांकन भी उनके वोट जुटाने की क्षमता को देखते हुये ही किया जाता है। यह कमी कांग्रेस में ही थी पर उस से भी कहीं अधिक दूसरों दलों में खास कर भाजपा में उभर कर आई।

कुछ महान व्यक्तियों के कार्य को बिल्कुल भुला दिया गया। उन में एक हैं, महात्मा श्रद्धानन्द। एक ऐसा महान व्यक्तित्व जो कि शायद महात्मा गांधी से भी महान था, उसे याद करने वाले केवल हमारे आर्य समाज के गुरुकुल वाले रह गये हैं। पर जिस रूप में यह गुरुकुल वाले याद करते हैं—संस्कृत और गुरुकुल प्रणाली से जोड़कर, उस में इस महान पुरुष के कद काठ को बहुत ही छोटा कर दिया और जिस महान आत्मा ने

सारे देश को जगाया वह गुरुकुल वालों का या कुछ हद तक आर्य समाज के नेता के रूप में ही देखा जाने लगा है। सच्चाई यह है कि गुरुकुल के साथ वे केवल 1906 से 1917 तक जुड़े रहे और अपने कटु अनुभव के बाद 1917 में सदा के लिये बाहर आ गये और उस के बाद न तो

वे फिर से गुरुकुल गये और न ही कभी नाम लिया। जब की महान स्वतन्त्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, महान दार्शनिक के रूप में उनके कद काठ व साहस वाला व्यक्ति पिछले 150 वर्षों में नहीं हुआ। No wonder Dr. Ambedkar called the Swami 'the greatest and the most sincere champion of the Untouchables' and When Gurukul at Kangri institution was visited by former British Prime Minister Ramsay Macdonald, he likened Munshi Ram to 'The Biblical Prophet walking the shores of Galilee.'



आईये जाने उनका सही मूल्यांकन इतिहासकार श्री पौलासता चक्रवर्ती के शब्दों में। The English translation of the soubriquet 'Mahatma', means 'Great Soul'. In Indian history, this honorific is bestowed upon Mohandas Karamchand Gandhi as 'Mahatma' Gandhi. Most historical texts characterize him as an angelic, saintly statesman who could do no wrong. Along with Jawaharlal Nehru, Gandhi is presented as the epitome of Indian nationhood. But this trend has prevailed because the history of the 'Indian Freedom Struggle' is principally narrated by the hagiographers of the aforementioned leaders. Any other leader,

statesman and freedom fighter was treated as an afterthought in history texts.

One such 'afterthought'—indeed, his name has all but been erased in Indian history textbooks—was a gallant leader,

also hailed as a 'Mahatma.' He was 'Mahatma Munshiram' more famously known as **Swami Shraddhanand**. For long, the Swami has been portrayed by historians as just a 'Hindu' revivalist. But if one goes through the story of his life one will find him to be a living portrait of bravery and sacrifice.

## Early Life

Born on February 22, 1856 at village Talwan in the Jalandhar district of the then undivided Punjab,



Shraddhanand was originally given the name of 'Brihaspati', but it was later changed to Munshiram. His father, Shri Nanak Chand, was in the service of the East India Company.

Young Munshiram's school education began at Varanasi and ended in Lahore after passing the examination to practice law. His early education was interrupted because of his father's frequent transfer to Mirzapur and Bareilly. This frequent movement prompted Munshiram to lead a wayward life getting involved in certain activities which are frowned upon by society at large. After coming across several instances of injustice as well as signs of depravity in the then Hindu society, an angry Munshiram denounced Hinduism. This denouncement coupled with an unruly lifestyle alienated him from friends and family (he was married by then). But on realizing the harmful affect his disorderly life had on his wife and children, Munshiram decided to mend his ways.

And it was at that favorable moment that Munshiram met the radical social reformer and founder of the Arya Samaj , **Swami Dayanand Saraswati**. After having an extensive discussion with the Swami on socio-religious matters Munshiram became a man with a mission to reform Hindu society. He became a successful lawyer practicing in Lahore and Jalandhar while simultaneously carrying out social activities for the Arya Samaj.

### The Arya Samaj years

As a follower of the Arya Samaj, Munshiram led a crucial campaign for women's education. In 1889, he penned an important series of articles regarding women's education in the Arya Samaj-run newspaper *Saddharmpracharak*. The series was entitled 'Half Justice' in which he pleaded for the education of women citing examples of Vedic Rishikas like Gargi and Matraiyi. As a matter of

fact, when he saw his own daughter coming under the influence of Christianity while studying in a Missionary-run school, he made up his mind to provide an education rooted in Indian ideals to the children of his compatriots in schools run by the Arya Samaj. His efforts led to the setting up of the first Kanya Mahavidyalay in Jalandhar.

Earlier in 1884, his fellow Arya Samajis with financial backing from their well-wishers inaugurated the Dayanand Anglo-Vedic School at Lahore. All Arya Samajis worked for the new project whole heartedly. But after some time, Munshiram started to feel that the Anglo element in the DAV School was overtaking the Vedic element, and accordingly declared the need for establishing the Gurukul system of education. This declaration followed a split in the Arya Samaj into the 'DAV' and 'Gurukul' factions.

After a brief financial struggle, the first Gurukul was established on 16 May 1900 at Gujranwala, now in Pakistan. It was eventually moved to Kangri near Haridwar on 4 March, 1902. The core idea of the Gurukul was to produce disciplined citizens instilled with a national outlook. When this institution was visited by former British **Prime Minister Ramsay Macdonald**, he likened Munshi Ram to '*The Biblical Prophet walking the shores of Galilee.*'

True to its reformist spirit, the Kangri Gurukul admitted students from all walks of life setting aside their caste and creed. Children were made to sit together in desegregated classrooms to eliminate any form of caste distinction. Munshiram personally would attend to the requirements of his students like a caring father.

During the colonial era, enlightened Hindu scholars pointed out the three main issues which had caused decay in the Hindu society—child marriage, forced widowhood and caste-based prejudice. As a response, Swami Dayanand Sarawsati instructed his Arya Samaj followers to

ensure the elimination of these decayed traditions to usher in a reformed Hindu community.

As a true Arya Samaji, Munshiram repeatedly defended the rights of the lower-castes and went on to establish 'Dalit Uddhar Sabha' which worked ceaselessly for the wellbeing of the much ignored untouchables. Being perturbed by the exploitation of the Hindu widows, he led the Arya Samaj to organize the remarriage of widows. These activities made Munshiram a widely respected figure among the general masses. It was due to his selfless commitment towards society's well-being which made the masses honour him a 'Mahatma.'

### **Rebellious Sannyasi**

In the year 1917, Munshi Ram became a 'Sanyasi', assuming the name 'Shraddhanand' and making Delhi his permanent home. But that did not keep him away from the problems plaguing the nation. In the year 1919, he joined Congress's Non-cooperation movement under the leadership of Gandhiji. When Gandhiji was arrested, Swami Shraddhanand led a protest march in the city of Delhi. As soldiers stationed on the streets threatened to open fire on the protesters, the courageous Swami advanced forward and dared them to shoot. The soldiers had to back down.

That same year, there was tension in the whole of Punjab following the massacre of innocent civilians in Jallianwala Bagh of Amritsar at the orders of General Dyer. Because of this, the Congress committee decided to shift its annual session from Amritsar where it was earlier planned. Swami Shraddhanand attended the Congress Working Committee meeting in Allahabad and strongly argued that the venue of session should remain in Amritsar as a sign of respect to the martyrs. The committee accepted

his argument as well as made him the chairman of the session.

The Swami's towering image moved the masses belonging to all castes and religions. Even the Muslims considered him their own. On 4 April 1919, a huge congregation of Muslims had gathered to mourn the death of those patriots who were protesting against oppressive policies of the British government. To address the crowd, the Muslim leaders invited Swami Shraddhanand. Reciting the famous Vedic Mantra "OM VISHWANI DEV" from the pulpit of the mosque, the Swami encouraged the congregation to carry out their nationalist activities. It was a perfect scene of amity between Hindus and Muslims.

### **Clash of the Mahatmas**

With the passage of time and changing political scenarios, a conflict broke out between Mahatma Gandhi and Swami Shraddhanand (formerly Mahatma Munshiram).

The first point of disputation between the two was regarding the issue of helping the untouchables. In his address as chairman of the Amritsar Congress session in 1919 he stated:

"Is it not true that so many among you who make the loudest noises about the acquisition of political rights, are not able to overcome their feeling of revulsion for those sixty millions of India who are suffering injustice, your brothers whom you regard as untouchable? How many are there who take these wretched brothers of theirs to their heart?...give deep thought...and consider how your sixty million brothers-broken fragments of your own hearts which you have cut off and thrown away- how these millions of children of mother India can well become the anchor of the ship of a foreign government. I make this one appeal to all of you, brothers and sisters. Purify your hearts with the water of the love of the

motherland in this national temple, and promise that these millions will not remain for you untouchables, but become brothers and sisters. Their sons and daughters will study in our schools, their men and women will participate in our societies, in our fight for independence they will stand shoulder-to-shoulder with us, and all of us will join hands to realize the fulfillment of our national goal”

In the Calcutta Congress session in 1920, Swami Shraddhanand proposed a three-point program with special section on the untouchables, but the party then firmly under Gandhi's leadership declared the program to be ill-timed. By 1921, the Swami was frustrated with Gandhi's negligence regarding the welfare of the untouchables. He wrote:

The Delhi and Agra Chamars simply demand that they be allowed to draw water from wells used by the Hindus and Mohammedans and that water be not served to them (from Hindu water booths) through bamboos or leaves. Even that appears impossible for the Congress Committee to accomplish.... At Nagpur you laid down that one of the conditions for obtaining Swarajya within 12 months was to give their rights to the depressed classes and without waiting for the accomplishment of their uplift, you have decreed that if there is a complete boycott of foreign cloth up till the 30th September, Swarajya will be an accomplished fact on the 1st of October...I want to engage my limited energy in the uplift of the depressed classes. I do not understand whether the Swarajya obtained without the so-called Untouchable brethren of ours joining us will prove beneficial for the Indian nation.

### **The Hindu Mahasabha Years**

The following year, Swami Shraddhanand resigned from the Sub-Committee of Congress

due to disagreements with Gandhi on helping the untouchables. The disagreement arose due to the Congress' refusal to meet the fiscal demands of Shraddhanand which was required for the welfare programs. Following his resignation from the Congress, Swamiji decided to join the Hindu Mahasabha. This issue has been covered in the Babasaheb Ambedkar's 'What Congress and Gandhi Have Done to the Untouchables?' As Ambedkar writes:

“Was it because the Congress intended that the scheme should be a modest one not costing more than two to five lakhs of rupees but felt that from that point of view they had made a mistake in including Swami Shraddhanand in the Committee and rather than allow the Swami to confront them with a huge scheme which the Congress could neither accept nor reject? The Congress thought it better in the first instance to refuse to make him the convener and subsequently to dissolve the Committee and hand over the work to the Hindu Mahasabha. Circumstances are not quite against such a conclusion. The Swami was the greatest and the most sincere champion of the Untouchables. There is not the slightest doubt that if he had worked on the Committee he would have produced a very big scheme.”

Gandhiji's incapability to speak in favor of caste eradication was again seen clearly during the 1925 Vaikom Satyagraha. The Satyagraha was centered at the Shiva temple at Vaikom, near Kottayam, Kerala where untouchables were denied entry. When local Congressmen and learned Hindu youngsters opposed these social constraints and asked for Gandhiji's blessing, he hesitated. On the contrary, Swami Shraddhanand decided swiftly to bless the campaign and himself visited Vaikom to show his support. No wonder Dr. Ambedkar called the Swami 'the greatest and the most sincere champion of the

Untouchables'.

The second issue of clash between Swamiji and Gandhiji was the issue of Hindu-Muslim unity. The Swami was a staunch supporter of Hindu-Muslim unity but that he did not welcome the Islamic fanaticism that was on the rise during the 1920's. He noticed the difference in attitudes of Muslim leaders during 1920-1922 on the Khilafat movement and assumed correctly that this movement will change the focus from gaining independence for India to Pan-Islamism.

In 1921 when Gandhi decided to boycott English products and called for a bonfire of foreign clothes, the Khilafat Muslim activists instead got permission from Gandhi to send the same foreign clothes to Turkey for use of their fellow Turkish Muslims. Swamiji felt uneasy during some of the Khilafat conferences where the Maulanas recited verses of the Quran containing frequent references to jihad and killing of kafirs. But Gandhi opined that "they are alluding to the British bureaucracy." Yet, Swamiji warned that "when the revulsion of feeling came," the Maulanas would not refrain from using those same verses against the Hindus. And he was right.

Following the failure of the Khilafat movement, horrendous atrocities were committed by the Moplah Muslims in Malabar, Kerala, against the Hindus. The Moplah Muslims saw Hindus as their enemies and unleashed terror upon them. Yet the resolution passed by the Working Committee of the Congress on 16 January 1922 on the Moplah atrocities shows how careful the Congress was to not hurt the feelings of the Muslims.

*"The Working Committee places on record its sense of deep regret over the deeds of violence done by Moplahs in certain areas of Malabar, these deeds being evidence of the fact that there are still people*

*in India who have not understood the message of the Congress and the Central Khilafat Committee, and calls upon every Congress and Khilafat worker to spread the said message of non-violence even under the gravest provocation throughout the length and breadth of India.....Whilst, however, condemning violence on the part of the Moplahs, the working Committee desires it to be known that the evidence in its possession shows that provocation beyond endurance was given to the Moplahs and that the reports published by and on behalf of the Government have given a one-sided and highly exaggerated account of the wrongs done by the Moplahs and an understatement of the needless destruction of life resorted to by the Government in the name of peace and order...The Working Committee regrets to find that there have been instances of so-called forcible conversion by some fanatics among Moplahs, but warns the public against believing in the Government and inspired versions..."*

So desperate was the Congress Party to uphold the legacy of the Khilafat that they went ahead subtly defending the barbaric Moplah atrocities. There was another issue which greatly concerned Swamiji. In his own writing:

*"As regards the removal of untouchability it has been authoritatively ruled several times that it is the duty of Hindus to expiate for their past sins and non-Hindus should have nothing to do with it. But the Mahomedan and the Christian Congressmen have openly revolted against the dictum of Mr. Gandhi at Vaikorn and other places. Even such an unbiased leader as Mr. Yakub Hassan, presiding over a meeting called to present an address to me at Madras, openly enjoined upon Musalmans the duty of converting all the untouchables in India to Islam."*

To stop the Islamicization of the country coupled with the shock he received following the Moplah atrocities, Swamiji established the Bharatiya Hindu Shuddhi Sabha along with Pandit Madan



Mohan Malavia in 1923 with the following declaration:

*The great Arya nation is said at the present moment to be a dying race, not only because its numbers are dwindling but because it is completely disorganized. Individually man to man second to no nation on the earth in intellect and physique, possessing a code of morality unapproachable by any other race of humanity, it is still helpless on account of its divisions and selfishness. Lakhs upon lakhs of the best in the race have been obliged to profess Mohammedanism and thousands have been enticed away to accept Christianity without the least effort on the neo-Muslim Brahmans, Vaishyas, Rajputs and Jats have for more than two centuries and more been casting yearning glances and kept their Hindu faith and prejudices intact in the hope of being taken back in the bosom of their brotherhood. A mere chance opened Hindu eyes, The Rajputs Mahasabha announced with a flourish of trumpets that four and a half lakhs Muslim Rajputs were ready for becoming Hindus. After having made this misleading announcement the Rajputs Sabha went to sleep. I call the announcement misleading because an overwhelming majority of them had never become Muslims in faith and practice. The Hindus went to sleep, but the Muslims being a living force were roused to action and scores of their preachers are at work for whose maintenance and propaganda work money is flowing like water. This after all roused the Hindu community also and there is now a cry from all sides for absorbing out strayed brethren in the bosom of the Vedic church, a new Sabha has been organized under the name of the Bhartiya Hindu Suddhi Sabha with the object of reclaiming those who are willing to come back to its fold.*

This process was opposed by many Muslim and Christian groups (which is hypocritical as both these faiths promote conversions). The massive

success of the Shuddhi movement was witnessed on the occasion of the reconversion of the Malkana Rajputs back to Hinduism. Centuries ago, the Malkana Rajputs in the Mathura-Agra area were forced to convert to Islam by the Moghuls but still retained the cultural traits of the Hindu Rajput clans. They asked Swami Shraddhanand if it was possible for them to return to the religious fold of their forefathers. The Swamiji readily acceded to this request and welcomed them back to the Vedic fold, infuriating many Muslim leaders. Most historians in their works blame Arya Samaj and Shuddhi as a cause of communal tensions in early part of 20th century. But as the Moplah violence showed, this is both a false claim and a distorted way of viewing the event.

## Death

As a response to the Shuddhi Movement, many Muslim leaders made a series of provocative speeches against the Arya Samaj and the Swami. Some of those speeches amounted to death threats but the brave Swami did not yield and continued his Shuddhi activities. Then on 23 December 1926 when he was lying sick in his bed, a fanatic named Abdul Rashid came to his residence stating his wish to discuss Islam with Swamiji. He had hidden a gun inside his shawl and on confronting Swami Shraddhanand, fired three shots at him, killing him.

As mentioned in the beginning of this article, Swami Shraddhanand has been portrayed by contemporary historians as just a 'Hindu' revivalist. His role in promoting women's education, eradication of untouchability, social welfare and patriotism have all been swept under the rug. He is revered only by the Arya Samajis. To the millions of Indians for whose welfare he vigorously labored throughout his life, and ultimately died for them, he is not even a memory.

\*\*\*\*\*

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



## महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059

शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली

आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org



**Rajesh and Archana distributing fruits and milk to slum children**

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

**A/c No. : 32434144307**

**Bank : SBI**

**IFSC Code : SBIN0001828**

मधुकर कौड़ा

लेखराम ( +91 7589219746 )



स्वर्गीय  
श्रीमती शारदा देवी  
सूद

निर्माण के 63 वर्ष

## गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई  
मुख्य स्थान जहाँ उपलब्ध है)



स्वर्गीय  
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त  
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047  
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

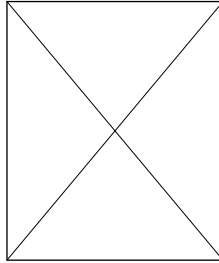
## जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



MR. MANISH TREHAN



MR. JATINDER ARORA



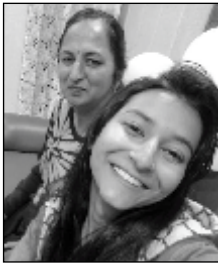
MRS AND MR DEEPAK



MRS RAJ KHANNA



MRS SHARDA SHUKLA



MRS SUMEDHA KAURA



MR. MUKESH GUPTA



SARLA



MR. SURINDER KAMBOJ





# मजबूती में बे-मिसाल

## घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years  
in service



# DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India  
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224  
E-mail : [diplastplastic@yahoo.com](mailto:diplastplastic@yahoo.com), Web : [www.diplast.com](http://www.diplast.com)

**QUALITY IS OUR STRENGTH**

### विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,  
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये  
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047  
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381  
E-mail : [bhartsood@yahoo.co.in](mailto:bhartsood@yahoo.co.in)